FAIZAN E MUFTI E AZAM HIND - H-M-MP-1C

(رحمۃُ اللہِ علیہ)

फ़ैज़ाने मुफ़्तिये आज़मे हिन्द

* मुफ़्तिये आज़म का फ़िक़्ही मक़ाम
* हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द उ़लमा व मशाइख़ की नज़र में
* इ़श्क़े रसूल * करामाते मुफ़्तिये आज़मे हिन्द

पेशकश :
मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी हिन्द)

DAWATE ISLAMI INDIA

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले नीचे दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عزوجل जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** पाक ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले । (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़ व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दावते इस्लामी इन्डिया)

येह रिसाला "**फ़ैज़ाने मुफ़्तिये आज़म हिन्द**"

मजलिसे **अल मदीनतुल इल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी हिन्द) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए WhatsApp, Email या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये ।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दावते इस्लामी इन्डिया)
फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापूर, अह़मदआबाद-1, गुजरात।
MO. 98987 32611 • E-mail : hind.printing92@gmail.com

फ़ेहरिस्त

मज़मून	नम्बर
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	4
तआ़रुफ़े मुफ़्तिये आज़म हिन्द	4
विलादते बा सआ़दत	5
बैअ़तो ख़िलाफ़त	7
ख़त्मे कुरआन	7
कुव्वते हाफ़िज़ा	8
तालीमो तरबियत	9
मशहूर तलामिज़ा	12
फ़तवा नवेसी	13
मुफ़्तिये आज़म का फ़िक़्ही मक़ाम	16
मुफ़्तिये आज़म कब और किस ने कहा ?	17
फ़तावा मुफ़्तिये आज़मे हिन्द	18
हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द उ़लमा व मशाइख़ की नज़र में	19
सफ़र में भी नमाज़ का पास	22
मुफ़्तिये आज़मे हिन्द की नमाज़	24
इ़श्क़े रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	29
तसानीफ़ व तालीफ़ात	33
करामात मुफ़्तिये आज़मे हिन्द	35
ग़ाइब तावीज़ किस त़रह़ मिल गया	37
एक ज़बरदस्त करामत का ज़ुहूर	38
वफ़ाते पुर मलाल	40
मुफ़्तिये आज़म से हम को प्यार है	40
मन्क़बते मुफ़्तिये आज़म	41
माख़िज़ो मराजेअ़	43

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

सय्यिदुल मुर्सलीन, ख़ातमुन्नबिय्यीन, जनाबे रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिल नशीन है : जो शख़्स मुझ पर एक मरतबा दुरूद पढ़ेगा अल्लाह पाक उस पर दस रह़मतें नाज़िल फ़रमाएगा।

(مسند ابی یعلیٰ، ج:۸، ص:۶۳۴، الحدیث:۶۴۹۵)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

तआ़रुफ़े मुफ़्तिये आज़मे हिन्द

प्यारे इस्लामी भाइयो ! हर दौर में अल्लाह पाक कुछ ऐसे बन्दों को दुन्या में मब्ऊ़स फ़रमाता है, जिन के फ़ुयूज़ो बरकात से एक आ़लम इस्तिफ़ादा करता है, गुनाहों में पड़े हुए लोगों को लज़्ज़ते इ़श्क़, दुन्यवी मह़ब्बत में डूबे अफ़राद को मह़ब्बते इलाही के जाम पीना नसीब होता है, जिन के इ़ल्मी फ़ैज़ान से मुस्तफ़ीज़ हो कर लाखों की ज़िन्दगी में अ़जीब इन्क़िलाब बरपा होता है, उन्हीं नेक बन्दों में एक नाम शहज़ादए आला ह़ज़रत अ़ल्लामा मुफ़्ती अश्शाह मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ान अल मारूफ़ मुफ़्तिये आज़मे हिन्द رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه का है। आइए मुख़्तसरन आप की सीरत को जानते हैं।

विलादते बा सआ़दत

ह़ज़रत मुफ़्तिये आज़म رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه की विलादत से पहले इमाम अह़मद रज़ा قُدِّسَ سِرُّهٗ अपने पीरो मुर्शिद, रहबरे कामिल, ज़ुब्दतुल आ़रिफ़ीन ह़ज़रत सय्यिद शाह आले रसूल मारहरवी قُدِّسَ سِرُّهٗ के मज़ारे मुक़द्दस की ज़ियारत और क़िदवतुस्सालिकीन, ह़फ़ीज़ुल कामिलीन, सय्यिदुल मशाइख़ ह़ज़रत सय्यिद

शाह अबुल हुसैन अह़मद नूरी قُدِّسَ سِرُّہٗ से मुलाक़ात के लिए मारहरए मुत़ह्हरा तशरीफ़ ले गए थे।

22/ज़िलह़िज्जा 1310 हिजरी की शब में तक़रीबन निस्फ़ रात तक इमाम अह़मद रज़ा قُدِّسَ سِرُّہٗ और सय्यिदुल मशाइख़ ह़ज़रत नूरी मियां قُدِّسَ سِرُّہٗ के दरमियान इल्मी मुज़ाकरात रहे। फिर दोनों अपनी अपनी क़ियाम गाहों में आराम फ़रमा हुए। इसी शब आ़लमे ख़्वाब में दोनों बुज़ुर्गों को ह़ज़रते मुफ़्तिये आज़म की विलादत की नवीद दी गई और नौ मौलूद का नाम ''आलुर्रह़मान'' (रह़मान वाला) बताया गया। ख़्वाब से बेदारी पर दोनों बुज़ुर्गों में से हर एक ने येह फ़ैस्ला किया कि ब वक़्ते मुलाक़ात मुबारक बाद पेश करूंगा। फ़ज्र की नमाज़ के लिए जब दोनों बुज़ुर्ग मस्जिद पहुंचे तो मस्जिद के दरवाज़े पर ही दोनों बुज़ुर्गों की मुलाक़ात हो गई और वहीं हर एक ने दूसरे को मुबारक बाद पेश की।

फ़ज्र की नमाज़ के बाद सय्यिदुल मशाइख़ ह़ज़रत सय्यिद शाह अबुल हुसैन अह़मद नूरी قُدِّسَ سِرُّہٗ ने इमाम अह़मद रज़ा قُدِّسَ سِرُّہٗ से इरशाद फ़रमाया : **मौलाना साह़िब !** आप इस बच्चे के वली हैं। अगर इजाज़त दें तो मैं नौ मौलूद को दाख़िले सिलसिला कर लूं। इमाम अह़मद रज़ा قُدِّسَ سِرُّہٗ ने अ़र्ज़ किया : हुज़ूर वोह ग़ुलाम ज़ादा है। उसे दाख़िले सिलसिला फ़रमा लिया जाए।

सय्यिदुल मशाइख़ ह़ज़रत सय्यिद शाह अबुल हुसैन अह़मद नूरी قُدِّسَ سِرُّہٗ ने मुसल्ला ही पर बैठे बैठे मुफ़्तिये आज़म को ग़ाइबाना दाख़िले सिलसिला फ़रमा लिया। ह़ज़रत सय्यिदुल मशाइख़ ने इमाम अह़मद रज़ा (رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ) को अपना इ़मामा और जुब्बा अ़त़ा फ़रमाते हुए इरशाद फ़रमाया : मेरी येह अमानत आप के सिपुर्द है। जब वोह बच्चा उस अमानत का मुतह़म्मिल हो जाए तो उसे दे दें। मुझे ख़्वाब में उस का नाम ''आलुर्रह़मान'' बताया गया है।

लिहाज़ा नौ मौलूद का नाम ''आलुर्रहमान'' रखिए। मुझे उस बच्चे को देखने की तमन्ना है। वोह बड़ा ही फ़ीरोज़ बख़्त और मुबारक बच्चा है। मैं पहली फ़ुरसत में बरेली हाज़िर हो कर आप के बेटे की रूहानी अमानतें उस के सिपुर्द कर दूंगा।

दूसरे रोज़ (23 ज़िल हिज्जा) जब विलादत की ख़बर मारहरा पहुंची तो सय्यिदुल मशाइख़ हज़रत सय्यिद शाह अबुल हुसैन अहमद नूरी قُدِّسَ سِرُّہٗ ने नौ मौलूद का नाम अबुल बरकात मोहयुद्दीन जीलानी मुन्तख़ब फ़रमाया। इमाम अहमद रज़ा قُدِّسَ سِرُّہٗ ने सातवें रोज़ मुहम्मद नाम पर बेटे का अक़ीक़ा किया। इस्मे मुहम्मद की बरकतों और सआदतों का कोई शुमार ही नहीं कर सकता।

इस नामे पाक की बरकतों और सआदतों में से एक येह भी है कि दुन्या में जो मोमिन इस नाम के साथ मौसूम होगा वोह जन्नत में बिग़ैर हिसाब दाख़िल होंगे। (जहाने मुफ़्तिये आज़म, स. 102/103)

बैअतो ख़िलाफ़त

इन इन्किशाफ़ के बाद 25 जमादियुस्सानी 1311 हिजरी छे माह तीन यौम की उम्र शरीफ़ में सय्यिदुल मशाइख़ हज़रत शाह अबुल हुसैन नूरी رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ ने अपनी अंगुश्ते शहादत आलुर्रहमान मुहम्मद अबुल बरकात मोहयुद्दीन जीलानी के दहन मुबारक में डाली। मुफ़्तिये आज़म (رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ) शीर मादर की तरह चूसने लगे, सय्यिदुल मशाइख़ ने दाख़िले सिलसिला फ़रमाया और तमाम सलासिल की इजाज़त व ख़िलाफ़त से सरफ़राज़ फ़रमाया।

(बित्तसर्रुफ़े क़लील, जहाने मुफ़्तिये आज़म, स. 102/103)

ख़त्मे कुरआन

हुज्जतुल इस्लाम हज़रत अल्लामा मुफ़्ती शाह मुहम्मद हामिद रज़ा

رَحۡمَۃُاللہِ عَلَیۡہ हज़रत मुफ़्तिये आज़म رَحۡمَۃُاللہِ عَلَیۡہ से उम्र में 8 साल बड़े थे। चन्द रोज़ ही में हुज्जतुल इस्लाम को अन्दाज़ा हो गया कि छोटा भाई मुस्तफ़ा रज़ा सरापा ज़िहानत है। वोह बड़ी मेहनत और लगन के साथ हज़रत मुफ़्तिये आज़म को पढ़ाने लगे, मुफ़्तिये आज़म ने सिर्फ़ तीन साल में नाज़रा कुरआने करीम ख़त्म कर लिया है।

नाज़रा कुरआने करीम की तक्मील के बाद इमाम अहमद रज़ा قُدِّسَ سِرُّہٗ ने उस्ताज़ुल असातिज़ा हज़रत अ़ल्लामा शाह रह़म इलाही मन्ज़ूरी قُدِّسَ سِرُّہٗ को बुला कर इरशाद फ़रमाया : मुस्तफ़ा रज़ा को आज से आप और मौलाना बशीर अहमद अ़लीगढ़ी पढ़ाएंगे। और आप की मेहनतें اِنۡ شَآءَاللہ सुर्ख़रू होंगी।

(मुफ़्तिये आज़मे हिन्द और उन के ख़ुलफ़ा, स. 27)

कुव्वते हाफ़िज़ा

हज़रत मुफ़्तिये आज़म قُدِّسَ سِرُّہٗ की तालीम का बा क़ाइदा आग़ाज़ हुवा तो आप की ज़हानत व फ़तानत का सब को एतिराफ़ करना पड़ा। हर सबक़ सिर्फ़ एक बार पढ़ के याद किया करते थे। एक मरतबा एक तालिबे इ़ल्म ने आप से पूछा : आप की याद दाश्त इतनी अच्छी क्यूं है? कि कभी कुछ भूलते ही नहीं। आप हाफ़िज़े को तक़्वियत पहुंचाने के लिए क्या खाते हैं?

हज़रते मुफ़्तिये आज़म رَحۡمَۃُاللہِ عَلَیۡہ ने जवाब में इरशाद फ़रमाया : हाफ़िज़ा ग़िज़ा से नहीं अ़ता से तअ़ल्लुक़ रखता है। अगर हाफ़िज़ा ग़िज़ा से तक़्वियत पाता तो कोई साहिबे सरवत ग़बी (कुंद ज़ेहन) न होता। बारगाहे अ़लीम से वाबस्तगी पैदा करो! वहीं से सब कुछ मिलता है।

(मुफ़्तिये आज़मे हिन्द और उन के ख़ुलफ़ा, स. 27/28)

प्यारे इस्लामी भाइयो! यक़ीनन हाफ़िज़ा मज़बूत होना रब عَزَّوَجَلَّ की

जानिब से मिलने वाला एक अ़ज़ीम अ़तिय्या है येह हर किसी को अ़ता नहीं होता, अलबत्ता ह़ाफ़िज़ा मज़बूत़ करने वाली चीज़ें इस में मुमिद्द व मुआ़विन ज़रूर होती हैं, याद रहे ! नमाज़े तहज्जुद अदा करना और तिलावते कुरआने पाक करना, ह़ाफ़िज़ा मज़बूत़ करने के अस्बाब में सरे फ़ेहरिस्त हैं। कहा गया है कि कुरआने पाक को देख कर पढ़ने से ज़ियादा कोई और चीज़ कुव्वते ह़ाफ़िज़ा को तेज़ नहीं करती।

पांचों नमाज़ों के बाद सर पर दाहिना (यानी सीधा) हाथ रख कर ग्यारह मरतबा یَاقَوِیُّ पढ़ने से भी ह़ाफ़िज़ा मज़बूत़ होता है।

(ह़ाफ़िज़ा कैसे मज़बूत़ हो, स. 124)

इस तअ़ल्लुक़ से मक्तबतुल मदीना की किताब **''ह़ाफ़िज़ा कैसे मज़बूत़ हो''** का मुत़ालआ़ बेह़द मुफ़ीद साबित होगा।

तालीमो तरबियत

मुफ़्तिये आज़म رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की उ़म्र जब चार साल चार माह चार दिन की हुई तो रस्मे बिस्मिल्लाह ख़्वानी कराई गई, इस के बाद ही आला ह़ज़रत फ़ाज़िले बरेल्वी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की निगरानी में आप की तालीमो तरबियत का बा क़ाइ़दा दौर शुरूअ़ हो गया। ह़ज़रत हुज्जतुल इस्लाम (رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه) भी आप की तालीम पर अपने वालिदे गिरामी के हुक्म से ख़ुसूसी तवज्जोह देते रहे।

जब कुछ सिने शुऊ़र को पहुंचे तो इ़ल्म व आगही से पूरे त़ौर पर आरास्ता व पैरास्ता होने के लिए दारुल उ़लूम मन्ज़रे इस्लाम बरेली में दाख़िला करा दिया गया। वहां मौलाना रह़म इलाही साह़िब मंगलोरी, हुज्जतुल इस्लाम मौलाना ह़ामिद रज़ा ख़ां, और मौलाना बशीर अह़द अ़लीगढ़ी से तक्मीले दरसियात करते रहे और दूसरी त़रफ़ मुजद्दिदे आज़म इमामे अहले सुन्नत

मुहद्दिसे बरेल्वी (رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه) की निगाहे कीमिया साज़ से भी फ़ैज़याब होते रहे यहां तक कि सिर्फ़ अठ्ठारह साल की उ़म्र में फ़तवा नवेसी का बे मिसाल जौहर दिखाया। यानी अ़हदे तुफ़ूलिय्यत से गुज़र कर सिने शुऊ़र की दहलीज़ पर क़दम रखते ही ऐसा कारनामा दिखाया कि अपने इ़ल्मो फ़न और तफ़क़्क़ोह फ़िद्दीन से बहुतों को मुतास्सिर कर दिया। (मुफ़्तिये आज़म की इस्तिक़ामत व करामत, स. 43)

आज मुआ़शरे में देखने को येही मिलता है कि लोग बचपन खेल में खोते हैं, जवानी नीन्द भर सोते हैं और जब बुढ़ापा आता है तब कुछ अ़मल की त़रफ़ राग़िब होते हैं। ह़ालांकि इस उ़म्र में तक़्वा व त़हारत इख़्तियार कर लेना ज़ियादा कमाल नहीं रखता। कम सिनी और जवानी में मुन्हिय्यात व मुन्किरात से अपने दामन को बचा लेना और शरीअ़ते मुत़ह्हरा के सांचे में अपने को ढाल लेना बहुत बड़ा कमाल है। मुफ़्तिये आज़म का सिग़रसनी और शबाब में भी तक़्वा व त़हारत के पैकर होने का इन्किशाफ़ आ़शिक़े रसूल, फ़ना फ़िर्रसूल सय्यिदुना क़ुत़्बे मदीना رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की ज़बानी मुलाह़ज़ा कीजिए और येह भी अन्दाज़ा कीजिए कि सय्यिदी आला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत इमाम अह़मद रज़ा मुह़द्दिसे बरेल्वी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने अपने वलदे अअ़ज़्ज़ (अ़ज़ीज़ तरीन बेटे) की किस ख़ूबसूरत अन्दाज़ में तरबियत फ़रमाई थी, ह़ज़रते क़ुत़्बे मदीना رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं :

मुफ़्तिये आज़म क़िब्ला की पैदाइश के वक़्त मैं सोलह साल का था, मैं ने मुफ़्तिये आज़म का बचपन देखा, जवानी देखी और अब बुढ़ापा भी देखा, लोग बुढ़ापे में अ़मल की त़रफ़ तवज्जोह करते हैं। बुढ़ापे में अ़मल की त़रफ़ तवज्जोह करना कोई कमाल की बात नहीं है। जवानी में, मुन्हिय्याते शरइय्या से मह़फ़ूज़ रहना और शरीअ़ते मुस्त़फ़विय्या पर अ़मल करना कमाल है।

ज़ियाउद्दीन अह़मद ने अपनी आंखों से देखा। واللهِ العَظِيم मुफ़्तिये आज़म बचपन ही से पैकरे इ़ल्मो अ़मल हैं, जामए ज़ोहदो तक़्वा हैं, उस वक़्त उन के इ़ल्मो फ़ज़्ल, ज़ोहदो तक़्वा, बुज़ुर्गी व परहेज़गारी फ़क़्रो इ़रफ़ान का कोई क्या अन्दाज़ा लगा सकता है। फ़क़ीर ज़ियाउद्दीन अह़मद मदनी उ़म्र में तो मुफ़्तिये आज़मे हिन्द से बड़ा ज़रूर है लेकिन मरातिब में मुफ़्तिये आज़मे हिन्द फ़क़ीर से बहुत बड़े हैं। (मुफ़्तिये आज़म की इस्तिक़ामत व करामत, स. 63)

अल्लाह पाक की इन सब पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

मश्हूर तलामिज़ा

हु़ज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ के तलामिज़ा की एक त़वील फ़ेहरिस्त है, उस्ताज़ की अच्छी सिफ़ात उन के तलामिज़ा में भी सरायत करती हैं, मुफ़्तिये आज़मे हिन्द तो इ़ल्मी व अ़मली कमालात के अ़ज़ीम जामेअ़ थे, इसी की बरकत से आप के तलामिज़ा में भी इ़श्क़े रसूल صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तसल्लुब फ़िद्दीन जैसे औसाफ़ मौजूद हैं, चन्द मश्हूर तलामिज़ा के नाम दर्जे ज़ैल हैं :

- फ़क़ीहे आज़म मुफ़्ती शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ
- उस्ताज़ुल ह़दीस मौलाना सरदार अह़मद रज़वी رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ
- शैख़ुल मुह़द्दिसीन मौलाना तह़सीन रज़ा ख़ां बरेल्वी رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ
- रैह़ाने मिल्लत मौलाना रैह़ान ख़ां बरेल्वी رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ
- शैख़ुल ह़दीस अ़ल्लामा अफ़्ज़ल हुसैन मुंगेरी رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ
- हु़ज़ूर ताजुश्शरीआ़ मुफ़्ती अख़्तर रज़ा ख़ां बरेल्वी رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ
- मुह़द्दिसे कबीर अ़ल्लामा ज़ियाउल मुस्त़फ़ा मिस्बाह़ी क़ादिरी
- फ़क़ीहे मिल्लत मुफ़्ती जलालुद्दीन अमजदी رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ

● बदरुल उ़लमा मौलाना बदरुद्दीन रज़्वी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه

● बह़रुल उ़लूम मुफ़्ती अ़ब्दुल मन्नान आज़मी मिस्बाह़ी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه

(जहाने मुफ़्तिये आज़मे हिन्द, स. 115/117)

फ़तावा नवेसी

प्यारे इस्लामी भाइयो ! फ़तावा नवेसी एक मुश्किल तरीन काम है, जिसे अह़सन अन्दाज़ में वोही निभा सकता है जिसे इ़ल्मे फ़िक़्ह के साथ दीगर फ़ुनून में महारत ह़ासिल हो । अगर हम चार जानिब नज़र करें तो इस फ़न के माहिरीन बहुत कम नज़र आते हैं, उन्हीं में माज़िये क़रीब की एक अ़ज़ीम इ़ल्मी व रूह़ानी शख़्सिय्यत जिन्हें अपने दौर का मुफ़्तिये आज़म कहा गया, जिन्हों ने बे लाग अन्दाज़ पर फ़तावा नवेसी का काम सरअन्जाम दिया, ज़बानी जवाबात तो बेशुमार दिए हैं जिन का इह़ात़ा मुमकिन नहीं, तेह़रीरी फ़तावा देखने हों तो 6 जिल्दों पर मुश्तमिल फ़तावा मुफ़्तिये आज़मे हिन्द देखा जा सकता है, जिसे पढ़ कर ह़ज़रत के फ़िक़्ही मक़ाम को समझा जा सकता है ।

इमाम अह़मद रज़ा قُدِّسَ سِرُّهٗ ने अपने वालिद मुफ़्ती नक़ी अ़ली ख़ां رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के नक़्शे क़दम पर चलते हुए अपने दोनों शेह़ज़ादों ह़ुज्जतुल इस्लाम और मुफ़्तिये आज़म को ज़ेवरे इ़ल्म से आरास्ता कर के बा क़ाइ़दा फ़तावा नवेसी की ख़ुसूसी तालीमो तरबिय्यत दी । चुनान्चे इमाम अह़मद रज़ा (رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه) जब अन्दर मकान में फ़तावा और तस्नीफ़ व तालीफ़ का काम करते तो कुतुब ख़ाने से किताबें निकाल कर ह़वाले की निशानदेही की ख़िदमत शेहज़ादए कबीर ह़ुज्जतुल इस्लाम मौलाना ह़ामिद रज़ा ख़ां बरेल्वी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه पर थी ।

1336 / 1908 ईसवी में उस्ताज़े ज़मन मौलाना ह़सन रज़ा ख़ां बरेल्वी قُدِّسَ سِرُّهٗ के विसाल के बाद जामेआ़ रज़विय्या मन्ज़रे इस्लाम बरेली का एहतिमाम

जब शहज़ादए कबीर हुज्जतुल इस्लाम मौलाना हामिद रज़ा खां बरेली قُدِّسَ سِرُّہٗ के सिपुर्द हुवा। तो हुज्जतुल इस्लाम की जगह शहज़ादए सग़ीर मुफ़्तिये आज़म मौलाना मुस्तफ़ा रज़ा बरेल्वी قُدِّسَ سِرُّہٗ को येह ख़िदमत तफ़्वीज़ की गई कि मुल्क व बैरूने मुल्क से आने वाले सुवालात के जवाबात की तैयारी में इमाम अहमद रज़ा (رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ) के हवाले के लिए किसी इबारत की ज़रूरत हो तो वोह किताब निकाल कर हवाले की निशानदही करें और इमाम अहमद रज़ा की ख़िदमत में पेश कर दें। हज़रत मुफ़्तिये आज़म (رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ) ने कमाले हुस्नो ख़ूबी के साथ येह ख़िदमत अन्जाम दी। (जहाने मुफ़्तिये आज़मे हिन्द, स. 125)

मौलाना महमूद अहमद क़ादरी رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ तज़्किरए उलमाए अहले सुन्नत में हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ के पहले फ़तवे पर तब्सिरा करते हुए लिखते हैं :

मौलाना ज़फ़रुद्दीन बिहारी व मौलाना सय्यिद शाह अ़ब्दुर्रशीद अ़ज़ीम आबादी दारुल इफ़्ता बरेली में काम कर रहे थे, एक दिन आप दारुल इफ़्ता में पहुंचे। मौलाना ज़फ़रुद्दीन साहिब फ़तवा लिख रहे थे, मराजेअ़ के लिए उठ कर फ़तावा रज़विय्या अलमारी से निकालने लगे हज़रत (मुफ़्तिये आज़म) ने फ़रमाया (नौ उ़म्री का ज़माना था) मैं ने कहा : फ़तावा रज़विय्या देख कर जवाब लिखते हो ? मौलाना ने फ़रमाया : अच्छा हो ? तुम बिग़ैर देखे लिख दो तो जानूं ? मैं ने फ़ौरन लिख दिया। वोह रज़ाअ़त का मस्अला था। येह आप का पहला जवाब था, येह वाक़िआ़ 1328 हिजरी का है, इस्लाह के लिए आला हज़रत (رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ) की ख़िदमत में पेश किया। सेहते जवाब पर इमामे अहले सुन्नत (आला हज़रत رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ) बहुत ख़ुश हुए, और صحّ الجواب بعون الملك الوهاب लिख कर तस्दीक़ी दस्तख़त सब्त फ़रमा दिया और अबुल बरकात मुहयुद्दीन जीलानी आलुर्रहमान

मुह़म्मद उ़र्फ़ मुस्त़फ़ा रज़ा की मोहर मौलाना ह़ाफ़िज़ यक़ीनुद्दीन (बरेल्वी) से बनवा कर अ़त़ा फ़रमाई। (तज़्किरए उ़लमा ए अहले सुन्नत, स. 223)

शारहे़ बुख़ारी नाइब मुफ़्तिये आज़म ह़ज़रत मुफ़्ती शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी फ़रमाते हैं : जो बात दीगर ज़हीन फ़त़ीन, ज़की उ़लमा को बरसहा बरस में तन्क़ीद, इस्लाह़ और हिदायत के बाद ह़ासिल होती है वोह ह़ज़रते मुफ़्तिये आज़म को पहले ही दिन ह़ासिल थी येह दलील है कि ह़ज़रते मुफ़्तिये आज़मे हिन्द जैसे वालिदए माजिदा के शिकमे पाक से वली बन कर आए थे, इसी त़रह़ मुफ़्तिये आज़म भी बन कर आए थे, اَلسَّعِیدُ مَنْ سُعِدَ فِی بَطْنِ أُمه (सआ़दत मन्द और नेक बख़्त वोह है जो पैदाइशी नेक बख़्त हो) से तफ़क्कोह फ़िद्दीन आप की फ़ित़रत जिबिल्लत व सरशत थी। ग़ौर करें कि एक अठ्ठारह साल का नौ उ़म्र आ़लिम पहला फ़तवा लिखता है और तस्हीह़ के लिए पेश करता है, इस दक़ीक़ बीन, नुक्ता रस की बारगाह में जिस की तेज़ निगाही का आ़लम येह था कि अगर किसी कलिमे में हज़ार माना होते तो वोह सब अव्वल नज़र में इह़ाते में आ जाते और जिस के बारे में उ़लमाए ह़रमैन ने येह फ़रमाया है कि अगर उन्हें इमामे आज़म अबू ह़नीफ़ा देख लेते तो उन की आंखें ठन्डी हो जातीं और उन्हें अपने तलामिज़ा में दाख़िल फ़रमा लेते मगर इस नौ उ़म्र मुफ़्ती के पहले फ़तवे पर उसे भी कहीं इस्लाह़ की ज़रूरत नहीं होती बात येह है कि शेर के बच्चों को किस ने शिकार करना सिखाया ? (मुफ़्तिये आज़म की इस्तिक़ामत व करामत, स. 44)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ علٰی محمَّد

मुफ़्तिये आज़म का फ़िक़्ही मक़ाम

मुफ़्तिये आज़मे हिन्द رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़िक़्ही नुक़्त़ए नज़र से अपने अहले ज़माना पर फ़ज़ीलत रखते थे, आप की फ़क़ाहत का कुछ अन्दाज़ा आप के

फ़तावा जात से लगाया जा सकता है, सिराजुल फ़ुक़हा मुहक़्क़िक़े मसाइले जदीदा मुफ़्ती निज़ामुद्दीन रज़वी मिस्बाही फ़रमाते हैं : फ़क़ीहे फ़क़ीदुल मिसाल आला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के आईनए जमालो कमाल, मस्नदुल वक़्त, हुज़ूर सय्यिदी व मुर्शिदी मुफ़्तिये आज़म رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ख़ुदा रसीदा बुज़ुर्ग, बुलन्द पाया फ़क़ीह और बहुत ही अ़ज़ीम मुफ़्ती थे। आप ने ख़ल्क़े ख़ुदा की रुश्दो हिदायत और तब्लीग़े दीन के लिए अपने लैलो नहार वक़्फ़ कर दिए थे, फिर भी कुछ वक़्त फ़ारिग़ कर के गाहे ब गाहे फ़तावा भी तह़रीर फ़रमाते, येह भी वक़्त का एक अ़ज़ीम अलमिया है कि आप के बहुत से फ़तावा मह़फ़ूज़ भी न रहे, ताहम जो कुछ मह़फ़ूज़ है, उस से भी आप की फ़िक़्ही अ़ज़मत का अन्दाज़ा ब ख़ूबी लगाया जा सकता है।

इस बे माया ने बड़ी उ़ज्लत में आप के मजमूअ़ए फ़तावा की फ़ेहरिस्त और चन्द फ़तावा का सरसरी और बाज़ का ब नज़रे ग़ाइर मुत़ालआ़ किया तो मह़सूस हुवा कि आप की ज़ाते बा बरकात में ख़ुदाए सुब्बूह़ व कुद्दूस ने वोह तमाम ख़ूबियां जम्अ़ फ़रमा दी हैं जो एक कामिल फ़क़ीह और माहिर मुफ़्ती में हुवा करती हैं। यानी वुस्अ़ते मुत़ालआ़, जुज़्इय्यात का इस्तिह़ज़ार, दलाइल की क़ुव्वत व ज़ोफ़ में इम्तियाज़, शवाहिद का इह़ाता, मुतआ़रिज़ जुज़्इय्यात में तत़बीक़, तरजीह़ की क़ुदरत, इस्तिख़राज का मल्का, ह़ालाते ज़माना की रिआ़यत, अहले ज़माना के ह़ालात से आगाही, साइल की अ़क़्ल व फ़हम के लिह़ाज़ से गुफ़्तगू, जामेअ़ और बेहतर ताबीर, साइल के ख़लजान का इदराक और उस का शाफ़ी ह़ल, मुख़्तसर येह कि उ़लमाए इस्लाम ने फ़ुक़हा के जो सात त़ब्क़ात बयान फ़रमाए हैं, उन में से आप दूसरे और तीसरे त़ब्क़े के फ़ुक़हाए मुमय्यज़ीन व मुरजह़ीन के ज़ुमर से नज़र आते हैं। (जहाने मुफ़्तिये आज़म, स. 440)

मुफ़्तिये आज़म कब और किस ने कहा ?

प्यारे इस्लामी भाइयो ! हो सकता है आप के ज़ेहन में सुवाल आए कि अ़ल्लामा मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ान नूरी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه को सब से पहले मुफ़्तिये आज़म कब कहा गया और किस ने कहा ? इस का जवाब देते हुए मुफ़्ती मुत़ीउ़र्रह़मान रज़वी लिखते हैं :

इमाम अह़मद रज़ा (رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه) के सातवें उ़र्स मुन्अ़क़िदा 25 सफ़र 1374 हिजरी के अ़ज़ीमुश्शान इज्लास में हुज्जतुल इस्लाम समेत हिन्दुस्तान के बड़े बड़े मुफ़्तियाने किराम और उ़लमाए उ़ज़्ज़ाम मौजूद थे। इस इज्लास में आप को मुफ़्तिये आज़म कहा गया और ह़ज़रत हुज्जतुल इस्लाम के हुक्म से मन्ज़ूर शुदा तजवीज़ों में से एक तजवीज़ में आप के लिए मुफ़्तिये आज़म का लफ़्ज़ आया है।

ऑल इन्डिया सुन्नी कोन्फ़रन्स मुन्अ़क़िदा 27 ता 30 अप्रेल 1946, मक़ाम बनारस के तारीख़ साज़ इज्लास जिस में पांच सौ मशाइख़े उ़ज़्ज़ाम सात हज़ार मुफ़्तियाने किराम और उ़लमाए उ़ज़्ज़ाम शरीक थे, इस में आप को बार बार मुफ़्तिये आज़म के लक़ब से याद किया गया और इस की मुख़्तलिफ़ तजवीज़ों में मुफ़्तिये आज़म लिखा गया है। (जहाने मुफ़्तिये आज़म, स. 458)

फ़तावा मुफ़्तिये आज़मे हिन्द

फ़तावा के इस अ़ज़ीम ज़ख़ीरे में सय्यिदी हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के गिरां क़द्र इल्मी फ़तावा मौजूद हैं येह सब से पहले तीन छोटे छोटे हिस्सों में शाएअ़ हुए। फिर एक ज़ख़ीम जिल्द में ह़ज़रते फ़क़ीहे मिल्लत (رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه) ने अपनी निगरानी में मुरत्तब फ़रमा कर शाएअ़ किए। अब कुछ ग़ैर मत़बूआ़ फ़तावा और बीस रसाइल मत़बूआ़ व ग़ैर मत़बूआ़ के इज़ाफ़े के

साथ छे जिल्दों में इमाम अह़मद रज़ा एकेडमी (बरेली शरीफ़) ने शाएअ़ किए हैं।

सदियों की शुमार के एतिबार से येह फ़तावा चौदहवीं सदी की यादगार हैं, इस लिए कि इस का तारीख़ी नाम बुज़ुर्गों की जानिब से अल मुकर्रमतुन्नबविय्यह फ़िल फ़तावा अल मुस्त़फ़विय्यह मन्क़ूल है।

ग़ालिबन तारीख़ी नाम हुज़ूर मुफ़्तिये आज़म के उस पहले फ़तवे के एतिबार से है जो आप ने मस्अलए रज़ाअ़त के सिलसिले में क़लम बरदाश्ता तह़रीर फ़रमाया था और इमाम अह़मद रज़ा मुह़द्दिसे बरेल्वी (رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه) ने बिग़ैर किसी इस्लाह़ के तस्वीब व तस्दीक़ फ़रमा कर आप की फ़िक़्ही बसीरत पर मुहर सब्त फ़रमा दी थी।

उन छे जिल्दों में तक़रीबन पांच सौ फ़तावा और 22 रसाइल का मुत़ालआ़ किया जा सकता है।

(मुक़द्दमा फ़तावा मुफ़्तिये आज़मे हिन्द, जि. : 1, स. 240)

हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द उ़लमा व मशाइख़ की नज़र में

प्यारे इस्लामी भाइयो ! कोई शख़्स अपने मुआ़सिर व हम रुत्बा के फ़ज़्लो कमाल का बहुत मुश्किल से क़ाइल होता है, अगर एक मुआ़सिर अपने मुआ़सिर के इ़ल्मो ह़िक्मत शराफ़त व नज़ाफ़त, ज़ोहदो तक़्वा और उस की शख़्सिय्यत की दिल आवेज़ी का मुतआ़रिफ़ हो तो उसे बड़ी अहमिय्यत ह़ासिल होती है और अहले इ़ल्म उस एतिराफ़ को क़दर की निगाह से देखते हैं। इस पहलू से जब हुज़ूर मुफ़्तिये आज़म की ज़ात को देखें तो बिला शुबा आप की ज़ात बड़ी मुन्फ़रिद व मुमताज़ नज़र आती है। आइए चन्द मुमताज़ उ़लमाए किराम के मुफ़्तिये आज़मे हिन्द رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के मुतअ़ल्लिक़ तास्सुरात जानते हैं :

सुल्तानुल आरिफ़ीन ख़्वाजा अबुल हुसैन अहमद नूरी मियां رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه

''येह बच्चा दीनो मिल्लत की बड़ी ख़िदमत करेगा और मख़्लूक़े ख़ुदा को इस की ज़ात से बहुत फ़ैज़ पहुंचेगा, येह बच्चा वली है, इस की निगाहों से लाखों गुमराह इन्सान दीने हक़ पर क़ाइम होंगे, येह फ़ैज़ का दरिया बहाएगा।''

सदरुल अफ़ाज़िल अल्लामा नईमुद्दीन मुरादाबादी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه

ताजुश्शरीआ अल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद अख़्तर रज़ा अज़हरी (رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه) का बयान है कि मैं ने सुना : हज़रत सदरुल अफ़ाज़िल से जब कोई मस्अला पूछता, हज़रत इस मस्अले में आप का क्या ख़याल है ? वोह अपनी राए बताते। फिर कोई कहता : हज़रत मुफ़्तिये आज़म (رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه) तो येह फ़रमाते हैं ? तो कहते बस ''जो मुफ़्तिये आज़म फ़रमाते हैं वोही हक़ व सहीह है।''

मुहद्दिसे आज़मे हिन्द अबुल हामिद हज़रत सय्यिद मुहम्मद अशरफ़ी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه

''आज की दुन्या में जिन का फ़तवे से बढ़ कर तक़्वा है। एक शख़्सिय्यत मुजद्दिद मिअते हाज़िरा के फ़रज़न्दे दिल बन्द का प्यारा नाम मुस्तफ़ा रज़ा बे साख़्ता ज़बान पर आता है और ज़बान बेशुमार बरकतें लेती है।''

नूर चश्मे आला हज़रत राहत दिल ख़स्तगां

मुफ़्तिये आज़म ब नाम मुस्तफ़ा शाहे ज़मन

और हुज़ूर मुफ़्तिये आज़म के एक फ़तवे पर आप ने येह तहरीर फ़रमाया : هذا قَوْلُ الْعَالِمِ الْمُطَاعِ وَمَا عَلَيْنَا إِلَّا الْاِتِّبَاعُ यानी येह आलिमे मताअ का इरशाद है और हम पर इस की पैरवी लाज़िम है।

हज़रत सय्यिद शाह मुहम्मद मुख़्तार अशरफ़ अशरफ़ी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه

हज़रत मुफ़्तिये आज़म رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه बिलाशुबा इन ही अकाबिरीन में से

थे जो दीनो सुन्निय्यत को फ़रोग़ देने के लिए पैदा होते हैं। ह़ज़रत की पूरी ज़िन्दगी पर एक त़ाइराना निगाह ही डालिए तो येह ह़क़ीक़त निखर कर सामने आ जाती है कि ख़ुलूस व लिल्लाहिय्यत उन की शख़्सिय्यत का ट्रेड मार्क था। उन का कोई क़ौल या अ़मल मेरी निगाह में ऐसा नहीं है जो ख़ुलूस व लिल्लाहिय्यत से आ़री हो। वोह अगर एक त़रफ़ मुतबह़ह़िर, आ़लिमे मुस्तनद और मोतबर फ़क़ीह मुख़्तलिफ़ उ़लूम व फ़ुनून के माहिर और शेरो अदब के मिज़ाज आश्ना थे तो दूसरी जानिब रियाज़त व इ़बादत, मुकाशफ़ा व मुजाहदा और असरारे बात़िनी के भी मह़रम थे।

ताजुश्शरीआ़ अ़ल्लामा अख़्तर रज़ा ख़ां क़ादिरी अज़हरी मियां رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ

मुफ़्तिये आज़म अल्लाह के वली थे, वलिय्ये बरह़क़ मुफ़्तिये आज़म के मुत्तक़ी होने में किसे शक है। वोह मुत्तक़ी ही नहीं मुत्तक़िये आज़म थे। मुफ़्तिये आज़म इ़ल्म के दरियाए ज़ख़्ख़ार थे। जुज़्इय्यात ह़ाफ़िज़े से बता देते थे। फ़तावा क़लम बरदाश्ता लिख दिया करते थे। उन का अ़मल उन के इ़ल्म का आईनेदार था जिन इ़ल्मी अश्काल में लोग उलझ कर रह जाते थे वोह ह़ज़रत चुटकियों में ह़ल फ़रमा दिया करते थे। (जहाने मुफ़्तिये आज़म, स. 1004/998)

सफ़र में भी नमाज़ का पास

प्यारे इस्लामी भाइयो ! सफ़र हो या ह़ज़र हर ह़ालत में हमें नमाज़ का एहतिमाम करना लाज़िम व ज़रूरी है, मुसलमानों की एक बड़ी तादाद जो नमाज़ी हैं मगर जब सफ़र दरपेश होता है उस वक़्त अच्छे ख़ासे नमाज़ी भी नमाज़ छोड़ देते हैं, ह़ालांकि नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, सह़ाबए किराम और बुज़ुर्गाने दीन की सीरत को देखें तो सफ़र में फ़र्ज़ तो दूर की बात नवाफ़िल

की भी पाबन्दी किया करते थे। आइए मुफ़्तिये आज़मे हिन्द رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه का एक वाक़िआ़ सुनते हैं जिस से आप के सफ़र में नमाज़ की पाबन्दी का इ़ल्म होगा। शाइ़रे इस्लाम राज़ इलाहाबादी मर्हूम बयान करते हैं :

एक बार बलरामपुर से ह़ज़रत (मुफ़्तिये आज़मे हिन्द رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه) को ले कर बज़रीए़ बस इलाहाबाद आ रहा था। ह़ज़रते मौलाना मुफ़्ती रिज़्वानुर्रह़मान साह़िब जो एक ज़बरदस्त आ़लिम हैं वोह भी हमराह थे। इलाहाबाद के क़रीब बस फाफा मऊ के पुल पर आ कर रुक गई। दरियाए गंगा पर पुल है, चूंकि पुल पर एक बस आ जा सकती है इस लिए बस रुक गई थी कि उधर से आने वाली बसें निकल जाएं तो येह जाए। ह़ज़रत ने सामने देखा कि सूरज डूबने वाला है। ह़ज़रत ने फ़रमाया कि नमाज़े अ़स्र कहां पढ़ी जाएगी ? मैं ने कहा कि ह़ज़रत इलाहाबाद में। ह़ज़रत ने फ़रमाया कि इलाहाबाद पहुंचते पहुंचते सूरज ग़ुरूब हो जाएगा और येह कह कर ह़ज़रत बड़ी तेज़ी से जा नमाज़ और लोटा ले कर बस से उतर गए। सड़क के किनारे बहुत गहरे ग़ार में बरसात का पानी जम्अ़ था। ह़ज़रत ने उस पानी को देख कर फ़रमाया कि मैं वहीं वुज़ू करूंगा और येह कह कर उस गहराई में बड़ी तेज़ी से उतरने लगे और इस क़दर मिज़ाज बरहम था कि मैं और मुफ़्ती रिज़वानुर्रह़मान डरने लगे कि आज तक ह़ज़रत को इस क़दर बरहम होते नहीं देखा। बस ह़ज़रत की ज़बान से येही जुम्ला बार बार निकलता था : **अरे मेरी नमाज़े अ़स्र ! अरे मेरी नमाज़े अ़स्र !** या अल्लाह करम फ़रमा दे और मैं नमाज़ अदा कर लूं। क्या ग़ज़ब है कि सूरज डूबा जा रहा है। येह कहते कहते ह़ज़रत बे तह़ाशा गहराई की त़रफ़ उतरने लगे। राह चलने वाले रोक रहे हैं। पोलीस वाला आवाज़ दे रहा है कि आप गिर पड़ेंगे मगर वोह उसी तेज़ी से नीचे उतरे जा रहे थे कि मैं ने दौड़ कर ह़ज़रत का हाथ किसी त़रह़ पकड़ा मगर इस क़दर क़ुव्वत कि मैं बता नहीं सकता। बस येह मालूम होता था कि हम

लोग बस अब गिरे तब गिरे। मगर ह़ज़रत पानी के क़रीब पहुंच गए। अब जब पानी में अपना लोटा डाला तो कीचड़ और पानी किनारे पर एक साथ निकला। मेरी त़रफ़ ह़ज़रत ने अपना रूमाल फेंक कर फ़रमाया : तुम अपनी नमाज़ पढ़ो तुम वुज़ू से हो, मैं ने हुक्म की तामील की और नमाज़ पढ़ने लगा। अब मैं येह देखता हूं कि अचानक ह़ज़रत उस पानी में चल कर बीच में पहुंच गए और एक पथ्थर पानी में उभर आया, उस पर बैठ कर वुज़ू फ़रमाने लगे। मेरी आंखें ह़ैरत से फटी पड़ रही थीं। या अल्लाह ! येह नह़ीफ़ और कमज़ोर बुज़ुर्ग किस त़रह़ बीच पानी में पहुंच गए और येह पथ्थर बीच पानी में किस ने और कब रख दिया। ह़ज़रत ने वुज़ू किया और वापस किनारे तशरीफ़ लाए। ह़ज़रत ने मुसल्ले पर नमाज़े अ़स्र शुरूअ़ कर दी, उधर मैं ने देखा और सड़क पर लोग ह़ैरत से येह तमाम मन्ज़र देख रहे थे। (मुफ़्तिये आज़म की इस्तिक़ामत व करामत, स. 64)

मुफ़्तिये आज़मे हिन्द की नमाज़

क़ुरआनो ह़दीस में कई मक़ामात पर ख़ुशूओ़ ख़ुज़ूअ़ के साथ नमाज़ पढ़ने का हुक्म दिया गया है, अल्लाह पाक ने कामयाब लोगों के औसाफ़ बयान करते हुए इरशाद फ़रमाया : قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ ۙ الَّذِیْنَ هُمْ فِیْ صَلَاتِهِمْ خٰشِعُوْنَ ۙ **तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान :** बेशक ईमान वाले कामयाब हो गए। जो अपनी नमाज़ में ख़ुशूओ़ ख़ुज़ूअ़ करने वाले हैं। (پارہ18، المؤمنون:2،1)

मुफ़्तिये अहले सुन्नत मुफ़्ती क़ासिम अ़त्तारी इस के तह़त लिखते हैं :

नमाज़ में ख़ुशूअ़ ज़ाहिरी भी होता है और बात़िनी भी, ज़ाहिरी ख़ुशूअ़ येह है कि नमाज़ के आदाब की मुकम्मल रिआ़यत की जाए मसलन नज़र जाए नमाज़ से बाहर न जाए और आंख के किनारे से किसी त़रफ़ न देखे, आस्मान की त़रफ़ नज़र न उठाए, कोई अ़ब्स व बेकार काम न करे, कोई कपड़ा शानों पर

इस त़रह़ न लटकाए कि उस के दोनों किनारे लटकते हों और आपस में मिले हुए न हों, उंगलियां न चटख़ाए और इस क़िस्म की ह़रकात से बाज़ रहे। बात़िनी ख़ुशूअ़ येह है कि अल्लाह पाक की अ़ज़मत पेशे नज़र हो, दुन्या से तवज्जोह हटी हुई हो और नमाज़ में दिल लगा हो। (सिरातुल जिनान, जिल्द : 6 स. 490)

हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की नमाज़ के मुतअ़ल्लिक़ बह़रुल उ़लूम ह़ज़रत मुफ़्ती अ़ब्दुल मन्नान आज़मी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه लिखते हैं :

घर से आप (हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه) के बर आमद होते (बाहर तशरीफ़ लाते) ही कई आदमी आप को आगे पीछे से घेर लेते, और मस्जिद के दरवाज़े तक पहुंचते पहुंचते जो मुश्किल से पचास क़दम की दूरी पर होगा किसी को दस्त बोसी का शरफ़ बख़्शते। किसी को मुसाफ़ह़े से नवाज़ते और किसी के सलाम का जवाब देते। इतने में मस्जिद के दरवाज़े में दाख़िल हो जाते। निहायत मतानत व आहिस्तगी से اَللّٰهُمَّ افْتَحْ لِيْ اَبْوَابَ رَحْمَتِكَ पढ़ते और इ़मामा उतार कर वुज़ू के लिए बैठ जाते। जो शख़्स आ़म इन्सानों के सामने कभी भी सर खोल कर न आया हो, जिस को लोगों ने अ़लल उ़मूम, ताजे करामत और कुलाहे इ़ज़्ज़त के साथ देखा हो और जो मस्जिद में अभी अभी इस शौकत के साथ दाख़िल हुवा हो। वोह अपने रब के हुज़ूर यूं नंगे सर हो कर ख़ादिमाना ह़ाज़िर हो, येह देख कर दूसरों में भी जज़्बए उ़बूदिय्यत (बन्दगी का जज़्बा) मचलने लगता था।

ख़ादिम एक बड़े लोटे में निस्फ़ (आधे) के क़रीब पानी पास ही रख देता और आप उस मुतवज़्ज़ा (वुज़ू करने की जगह) पर तशरीफ़ फ़रमा होते जहां वुज़ू के लिए पाइप लगे होते हैं। पहली बार मैं ने येह ह़ालत देखी तो मुझे येह त़ूल अ़मल मालूम हुवा। लेकिन दरयाफ़्त से मालूम हुवा कि नल से वुज़ू करने

में पानी ज़ियादा ज़ाएअ़ होता है, इस लिए ह़ज़रत नल से वुज़ू पसन्द नहीं करते कि वुज़ू में पानी का ज़ाएअ़ करना इसराफ़ है। मैं ने पूछा पानी क्यूं आधा लोटा रखा गया ? तो मालूम हुवा कि लोटा भर दिया जाए तो ह़ज़रत के हाथ से उठ न सकेगा। ख़याल हुवा कोई दूसरा वुज़ू करा देता, दूसरे लम्हे ख़याल आया वुज़ू ख़ुद ही करना मुस्तह़ब है।

सारे आज़ा सुन्नत के मुवाफ़िक़ मुकम्मल त़ौर पर धुलते। चेहरा धुलते वक़्त अलबत्ता दसियों बार आंखों पर पानी के छींटे देते चूंकि किसी के दिल में येह ख़याल आ सकता था कि कहां तो पानी के इस्तिमाल में वोह एह़तियात़ और कहां येह कुशादा दस्ती, दफ़्अ़ शुबा के लिए ख़ुद ही फ़रमा देते। बार बार आंखें चिपक जाती हैं यानी आंख से बत़ौरे मरज़ जो पानी निकले नाक़िस वुज़ू है। पूरे वुज़ू में अदइ़य्या मासूरा की तिलावत पस्त आवाज़ में जारी रहती।

अरकाने नमाज़ की अदाएगी में तो मअ़हूद त़रीक़ा ही बरतते लेकिन ख़ुशूओ़ ख़ुज़ूअ़ का येह आ़लम था कि पूरी नमाज़ में आप के वुजूद पर उ़बूदिय्यत की शान और बन्दगी का जमाल त़ारी रहता था। देखने वाला दूर से ही फ़ैसला कर लेता था कि एक मोमिन क़ानत ने अपने मौला की रिज़ा जोई के लिए अपने वुजूद को इज्ज़ व दरमान्दगी और अ़रज़े इल्तिमास के सांचे में ढाल लिया है।

मुफ़्तिये आज़म (رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه) का ज़ोहदो तक़्वा

आख़िरी औक़ात में जब ज़ईफ़ व नक़ाहत में बेह़द इज़ाफ़ा हो गया और बैठे रहने में भी तक्लीफ़ होती थी। येह देखा गया कि मस्जिद में जब तक बैठे हैं मुसलसल कराह रहे हैं। उठते हैं तो सहारा दिया जाता है। बैठते हैं तो सहारे की ज़रूरत होती है। चलते हैं तो लोग दोनों त़रफ़ से संभाले रहते हैं लेकिन जैसे

ही तक्बीर शुरूअ़ हुई ऐसी चुस्ती के साथ खड़े हो जाते जैसे कोई तक्लीफ़ ही न हो । पूरी नमाज़ क़ियाम व रुकूअ़ के साथ निहायत तन्दही और मुस्तअ़द्दी (चुस्ती व फुरती) के साथ अदा करते और उफ़ तक की सदा लब तक न आती । जैसे क़ियाम व क़ुऊ़द और रुकूअ़ व सुजूद की मशक़्क़तें ख़शिय्यते इलाही और ख़ौफ़े रब्बानी में तह़लील हो गई हों कि इरशादे इलाही है : وَ اِنَّهَا لَكَبِیْرَةٌ اِلَّا عَلَى الْخٰشِعِیْنَ(۴۵) **तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान :** बेशक नमाज़ ज़रूर भारी है मगर उन पर जो दिल से मेरी त़रफ़ झुकते हैं। (پ1، البقرۃ:45) या यूं कहिये कि सारी कुल्फ़तें राह़त व आराम में बदल गईं । (जहाने मुफ़्तिये आज़म, स. 245)

हमें भी चाहिए कि जब भी नमाज़ पढ़ें तो ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़ के साथ पढ़ें ! यक़ीनन हर मुसलमान का अ़क़ीदा व नज़रिय्या है कि अल्लाह पाक हमें हर वक़्त देख रहा है, इसी बात को क़ुरआनो ह़दीस में मुतअ़द्दद मक़ामात पर बयान भी किया गया है, अगर इस एह़सास को हम हमेशा अपने साथ रखें तो बहुत सारे गुनाहों से बचने की तौफ़ीक़ मिलेगी । बन्दा इस बात से शर्म मह़सूस करेगा कि मेरा रब मुझे देख रहा है और मैं गुनाह करूं, नहीं नहीं मैं गुनाह नहीं करूंगा । दीने इस्लाम में इ़बादत में ख़ुसूसिय्यत के साथ इस पर अ़मल की तल्क़ीन फ़रमाई गई है कि इस बात को ज़ेहन में बिठाए रखे कि अल्लाह मुझे देख रहा है । चुनान्चे

ह़ज़रते जिब्रईल عَلَیْهِ السَّلَام ने नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ किया : فَأَخْبِرْنِي عَنِ الإِحْسَانِ، قَالَ: أَنْ تَعْبُدَ اللهَ كَأَنَّكَ تَرَاهُ، فَإِنْ لَمْ تَكُنْ تَرَاهُ فَإِنَّهُ يَرَاكَ : मुझे एह़सान के मुतअ़ल्लिक़ बताइए ! नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : एह़सान येह है कि तुम अल्लाह की इस त़रह़ इ़बादत करो गोया कि तुम उसे देख रहे हो, अगर येह एह़सास पैदा न हो तो येह यक़ीन रखो कि अल्लाह तुम्हें देख रहा है । (صحیح بخاری، ج:1، ص:27، حدیث:50)

इमाम नववी رَحۡمَۃُاللہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : अगर हम येह एह़सास पैदा कर लें कि हम में से कोई इ़बादत के लिए खड़ा हो तो येह समझे कि अपने रब को देख रहा है इस सूरत में वोह जितनी कु़दरत रखेगा सब उस में ख़र्च कर देगा कि वोह इ़बादत को ख़ुशूओ़ ख़ुज़ूअ़, बिल्कुल ख़ामोशी और ज़ाहिरी व बात़िनी आदाब के साथ मुकम्मल अन्दाज़ में बजा लाए। (شرح النووي على مسلم، ج:1، ص:157)

ह़ज़रते अबू दर्दा رَضِیَ اللہُ عَنۡہ ने एक शख़्स को नसीह़त करते हुए इरशाद फ़रमाया : अल्लाह की इ़बादत इस त़रह़ करो जैसे कि तुम उसे देख रहे हो। (جامع العلوم والحكم، ج:1، ص:105)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! अपने बुज़ुर्गों की सीरत के इन दरख़्शिन्दा पहलूओं (रौशन) पर अ़मल कर के अपनी ज़िन्दगी को पाकीज़ा और दूसरों के लिए नमूनए अ़मल बनाएं !

इ़श्के़ रसूल صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

हु़ज़ूर मुफ़्तिये आज़म हिन्द رَحۡمَۃُاللہِ عَلَیۡہ जहां दीगर औसाफ़े जलीला के ख़ूगर थे वहीं एक मोमिन की सब से अ़ज़ीम दौलत इ़श्के़ रसूल में भी अपना अलग ही मक़ाम रखते थे, आप की ज़ात तो वोह थी जिस की बदौलत लाखों लोगों को इ़श्के़ रसूल صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ला ज़वाल दौलत नसीब हुई, और आज भी लोगों में अपने किरदार और अश्आ़र के ज़रीए़ इ़श्के़ रसूल पैदा कर रहे हैं, सामाने बख़्शिश में फ़रमाते हैं :

जाने ईमां है मह़ब्बत तेरी जाने जानां — जिस के दिल में येह नहीं ख़ाक मुसलमां होगा
मह़ब्बत तुम्हारी है ईमान की जां — अगर येह नहीं है तो ईमां हवा है

आप के इ़श्के़ रसूल के मुतअ़ल्लिक़ मुफ़्ती आ़बिद हु़सैन मिस्बाह़ी नूरी लिखते हैं : मुफ़्तिये आज़म के इ़श्क़ और मह़ब्बते रसूल का येह आ़लम होता

कि बल्कुल बा अदब और मुहज़्ज़ब हो कर जब तक नात पढ़ी जाती दो ज़ानू या एक पांव उठा कर यक्सूई (तवज्जोह) के साथ बैठे रहते और वारफ़्तगिए शौक़ इस क़दर बढ़ जाता कि अश्कों (आंसूओं) के मोती रोके नहीं रुकते। आइए ह़क़ीक़त बयानी आ़शिक़ों की ज़बानी सुनिए :

ह़ज़रते फ़ैज़ुल आ़रिफ़ीन शाह सूफ़ी मुनव्वर हुसैन बदायूनी قُدِّسَ سِرُّہٗ फ़रमाते हैं : बेटा मैं ने 25 मरतबा हुज़ूर आला ह़ज़रत बरेल्वी رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ की बरेली जा कर ज़ियारत की और बड़ी कसरत से बरेली शरीफ़ जा कर ह़ज़रते हुज्जतुल इस्लाम बरेल्वी और हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ से मुलाक़ात का शरफ़ ह़ासिल करता था। कभी कभी शब में मह़ल्ला सौदागरान रुक जाता था और बाद नमाज़े इ़शा हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द क़िब्ला की मौजूदगी में नात गोई का जो दौर चलता वोह दीदनी (देखने) से तअ़ल्लुक़ रखता था। हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ नात सुन कर इस क़दर तसव्वुरे मह़बूब में मुस्तग़्रक़ हो जाते थे कि आप को ख़ुद अपना होश नहीं रहता था और अश्कों के मोती रूए अन्वर (नूरानी चेहरे) पर इस क़दर निछावर होते नज़र आते थे कि हम लोग यानी सामईन पर एक सक्ता त़ारी हो जाता था, कभी कभी ह़ज़रत क़िब्ला ख़ुद भी तह़ते लफ़्ज़ में आला ह़ज़रत के और अपने अश्आ़र सुनाया करते थे। जब कभी हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द क़िब्ला आला ह़ज़रत क़िब्ला का येह शेर सुनाते थे तो उस वक़्त आ़लम कुछ न पूछो। वोह शेर येह है।

ह़रम की ज़मीं और क़दम रख के चलना अरे सर का मौक़अ़ है ओ जाने वाले

जानशीने मुफ़्तिये आज़मे हिन्द हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ मुफ़्ती अख़्तर रज़ा ख़ां अज़हरी رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ लिखते हैं : सय्यिदी मुफ़्तिये आज़म ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुस्त़फ़ा रज़ा قُدِّسَ سِرُّہٗ रिज़ाए मुस्त़फ़ा थे और जो अ़ज़मत

उन्हें ह़ासिल हुई, वोह मह़ब्बते रसूल عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِيْم की बिना पर और बिलाशुबा इ़श्क़े मुस्त़फ़ा عَلَيْهِ التَّحِيَّةُ وَالثَّنَاء ही जाने ईमान है। ह़ज़रते मुफ़्तिये आज़म की सरकार عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के इ़श्क़ में फ़नाइयत का शाहिद उन की ज़िन्दगी का लम्ह़ा लम्ह़ा है, मह़ब्बते रसूल में उन के फ़ना होने का सह़ीह़ अन्दाज़ा इस बात से होता है कि आख़िर उ़म्र में बा वुजूदे शदीद अ़लालत के नात की मेह़फ़िल में घन्टों बा अदब बैठे रहते थे और नाते पाक के हर मिस्रअ़ पर रोना और वालिहाना कैफ़िय्यत का त़ारी होना इस बात का ग़म्माज़ (इशारा दे रहा) है कि वोह मुस्त़फ़ा عَلَيْهِ التَّحِيَّةُ وَالثَّنَاء की मह़ब्बत में गुम हो चुके थे। (मुफ़्तिये आज़म की इस्तिक़ामत व करामत : 157)

सफ़रे ह़ज में जब आप ग़ारे सौर की ज़ियारत के बाद ग़ारे ह़िरा के पास पहुंचे तो अपना इमामा मुबारका, जुब्बा, सद्री, कुर्ता सब उतार कर ज़मीन पर रख दिया। उस वक़्त सोज़िशे इ़श्क़ से आप का क़ल्ब तपां और आंखों से अश्क रवां था, ग़ार के अन्दर तशरीफ़ ले गए और उस की पाक मिट्टी बदन पर मलने लगे और उस के ज़र्रात से अपनी पेशानी को इस त़रह़ चमकाया कि कहकशां का जमाल, आफ़्ताब की शुआ़एं और माहताब की दरख़्शानी भी इस की ताबानियों पर कुरबान होने लगीं। और जब मुवाजहए अक़्दस में सला

पेश करने की सआ़दत नसीब हुई तो ह़रम शरीफ़ के ख़ादिम से झाड़ू ले कर दुरूद शरीफ़ पढ़ते हुए उस मुबारक सर ज़मीन को बुहारा (झाड़ू लगाने की सआ़दत ह़ासिल की)। उस वक़्त आप का जज़्बए इ़श्क़ और कैफ़ व सुरूर बयान से बाहर है। एक मुद्दत से ख़्वाबीदा आरज़ू आज बेदार हो चुकी थी, दिल में मसर्रत की कलियां खिल उठीं और मुरादें बर आईं जिन्हें आप ने अपनी नाते पाक में नज़्म फ़रमाया है :

ख़ुदा ख़ैर से लाए वोह दिन भी नूरी मदीने की गलियां बुहारा करूं मैं

(मुफ़्तिये आज़म की इस्तिक़ामत व करामत : 157)

बुन्यादी तौ़र पर नात गोई का मोह़र्रिक इ़श्क़े रसूल है और शाइ़र का इ़श्क़े रसूल जिस उ़मुक़ या पाए का होगा उस की नात भी उतनी ही पुर असर व पुरसोज़ होगी। शाइ़री तो हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه को गोया इमामे अहले सुन्नत से विरसे में मिली थी, मुफ़्तिये आज़म की शाइ़राना हैसिय्यत का इ़रफ़ान जानने के लिए आप के नातिया दीवान सामाने बख़्शिश[1] को देखा जा सकता है। सामाने बख़्शिश आप का गिरां क़दर शेअ़री मज्मूआ़ है, जिस के मश्मूलात सिनफ़ेवार कुछ इस त़रह़ हैं :

ह़म्द 2, नात 53, मन्क़बत 4, सलाम 4, रुबाइ़य्यात 6।

मुफ़्तिये आज़मे हिन्द رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه सामाने बख़्शिश में फ़रमाते हैं :

त़बक़ पर आस्मां के लिखता मैं नाते शहे वाला
क़लम ऐ काश मिल जाता मुझे जिब्रील के पर का

तसानीफ़ व तालीफ़ात

तह़रीर व क़लम की अहमिय्यत हर दौर में मुसल्लम रही है। हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه भी मैदाने तस्नीफ़ो तालीफ़ के अ़ज़ीम शहसुवार थे, आप क़लम की अहमिय्यत से अच्छी त़रह़ वाक़िफ़ थे, हुज़ूर ह़ाफ़िज़े मिल्लत शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मोह़द्दिसे मुबारकपुरी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मुफ़्तिये आज़म एक मरतबा ख़ुद फ़रमाने लगे कि जब कोई मस्अला लिखने के लिए क़लम हाथ में लेता हूं तो नोके क़लम पर मज़ामीन की इस क़दर बारिश होने लगती है कि संभालना मुश्किल हो जाता है। (मक़ालाते मिस्बाह़ी, स. 403)

(1) मक्तबतुल मदीना इन्डिया ने सामाने बख़्शिश किताब शाएअ़ की है जिसे आप मक्तबतुल मदीना इन्डिया की किसी भी ब्रांच से ह़ासिल कर सकते हैं।

आप की तसानीफ़ अगर्चे बहुत ज़ियादा नहीं मगर जो हैं उन से आप के बे पनाह इल्मो फ़ज़्ल का ब ख़ूबी अन्दाज़ा लगाया जा सकता है। आप की कुतुब की मज्मूई तादाद अड़तीस (38) है। आप की चन्द कुतुब के नाम येह हैं :

- फ़तावा मुस्तफ़विय्या (फ़तावा मुफ़्तिये आज़मे हिन्द)
- नातिया दीवान सामाने बख़्शिश
- मसाइले समाअ़
- मस्लके मुरादाबाद पर मोतरिज़ाना रीमार्क
- दाढ़ी का मस्अला
- वहाबिय्या की तक़िय्या बाज़ी
- مقتل اکذب و اجهل
- مقتل کذب و کید
- وقعات السنان فی حلق المسماۃ بسط البنان
- الموت الاالحمر
- ادخال السنان الی حنك الحلقی بسط البنان
- طرد الشیطان (عمدۃ البیان) وقایۃ اهل السنۃ عن مکر دیوبند و الفتنه
- سیف القهار علی عبید الکفار
- الرجم الدیانی علی راس الوسواس الشیطانی
- نهاء السنان
- تنویر الحجۃ بالتواء الحجۃ
- القثم القاصم للداسم القاسم
- اشد الباس علی عابد الخناس
- حاشیه تفسیر احمدی

- حاشیہ فتاویٰ عزیزی
- شفاء العی فی جواب سوال ببمبئی
- الملفوظات

(जहाने मुफ़्तिये आज़म, स. 757/774)

करामाते मुफ़्तिये आज़मे हिन्द

ज़मानए नुबुव्वत से आज तक अहले ह़क़ के दरमियान कभी भी इस मस्अले में इख़्तिलाफ़ नहीं हुवा, सभी का अ़क़ीदा है कि सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان और औलिया उ़ज़्ज़ाम رحمهمُ الله السَّلام की करामतें ह़क़ हैं। हर ज़माने में अल्लाह वालों से करामात का ज़ुहूर होता रहा और اِنْ شَآءَالله क़ियामत तक कभी भी इस का सिलसिला ख़त्म नहीं होगा।

करामत क्या है ? मश्हूर मुफ़स्सिर व ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : इस्ति़लाह़े शरीअ़त में करामत वोह अ़जीबो ग़रीब चीज़ है जो वली के हाथ पर ज़ाहिर हो। ह़क़ येह है कि जो चीज़ नबी का मोजिज़ा बन सकती है वोह वली की करामत भी बन सकती है, सिवा उस मोजिज़े के जो दलीले नुबुव्वत हो जैसे वह़ी और आयाते क़ुरआनिय्या। (मिरआतुल मनाजीह़, जिल्द : 8, स. 268)

इमाम इब्ने आ़बिदीन शामी ह़नफ़ी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه इमाम नसफ़ी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के ह़वाले से फ़रमाते हैं :

وَكَرَامَاتُ الْأَوْلِيَاءِ حَقٌّ، فَتَظْهَرُ الْكَرَامَةُ عَلَى طَرِيقِ نَقْضِ الْعَادَةِ لِلْوَلِيِّ، مِنْ قَطْعِ الْمَسَافَةِ الْبَعِيدَةِ فِي الْمُدَّةِ الْقَلِيلَةِ، وَظُهُورِ الطَّعَامِ وَالشَّرَابِ وَاللِّبَاسِ عِنْدَ الْحَاجَةِ، وَالْمَشْيِ عَلَى الْمَاءِ وَالْهَوَاءِ

तर्जमा : औलियाउल्लाह की करामात ह़क़ हैं, पस वली की करामत ख़िलाफ़े आ़दत त़रीक़े से ज़ाहिर होती है मसलन त़वील सफ़र को कम वक़्त में त़ै कर लेना, ज़रूरत के वक़्त खाने पीने और पहनने की चीज़ों का ज़ाहिर हो जाना, पानी और हवा पर चलना। (رد المحتار، ج:۳، ص:۵۵۱)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه से भी मुख़्तलिफ़ औक़ात में कई करामतों का ज़ुहूर हुवा, शारहे बुख़ारी मुफ़्ती शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ह़ज़रते मुफ़्तिये आज़म का ह़ाल येह था कि वोह अपनी करामतों को तावीज़ के पर्दे में छुपाए हुए थे, जिस की दलील येही है कि येही तावीज़ात बहुत से लोग लिखते हैं मगर फ़ाएदा नहीं होता। (जहाने मुफ़्तिये आज़म, स. 331)

ग़ाइब तावीज़ किस त़रह़ मिल गया

राज़ इलाहाबादी लिखते हैं : ह़ज़रत (मुफ़्तिये आज़मे हिन्द رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه) ने मेरी अहलिय्या को एक तावीज़ इनायत फ़रमाया था, इस के बान्धते ही उन का मरज़ ग़ाइब हो गया था, वरना वोह हर साल सख़्त बीमार हो जातीं थीं और बिल्कुल पीली पड़ गईं थीं, मगर उस तावीज़ ने बिल्कुल इन्जेक्शन जैसा असर किया था, वोह बिल्कुल सेह़त मन्द हो चुकी थीं, दो साल के बाद अचानक वोह तावीज़ गुम हो गया, मैं ने ह़ज़रत की ख़िदमत में एक ख़त़ लिख कर इज़हार किया। रात को मेरी वालिदा साह़िबा बैठी हुई येही बातें कर रही थीं कहने लगीं कि ह़ज़रत की ख़िदमत में अगर जिन्नात रहते हैं, तो तावीज़ मिल जाना चाहिए और वोह तावीज़ ला कर दे सकते हैं। रात येह बात हुई सुब्ह़ 8 बजे मेरा लड़का गली में निकला, दरवाज़े के सामने वोही तावीज़ पड़ा था, लड़के ने उठा लिया और घर में आ कर हम लोगों को दिखाया, 4 दिन हो गए थे तावीज़ गुम हो गया

था। उसी दिन से वोह तक्लीफ़ फिर शुरूअ् हो चुकी थी। हम ने समझ लिया था कि ख़त् जैसे ही पहुंचेगा, ह़ज़रत तावीज़ ब ज़रीए् डाक ज़रूर भेजेंगे मगर उस दिन सुब्ह़ तावीज़ मिलते ही मेरी अहलिया ने बान्ध लिया, बान्धना था कि दर्द वग़ैरा ग़ाइब हो गया वोह तावीज़ अब तक है।

(मुफ़्तिये आज़मे हिन्द की करामात, स. 89)

एक ज़बरदस्त करामत का ज़ुहूर

इलाहाबाद से कुछ दूर पच्छिम में एक मश्हूर क़स्बा इस्माईलपुर है। वहां के लोग ह़ज़रत (मुफ़्तिये आज़मे हिन्द رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه) का नाम सुन कर कन्ड़ा ज़िल्अ् प्रतापगढ़ के एक जल्से में गए। ह़ज़रत का नाम लोगों ने इश्तिहार में दे दिया था मगर ग़ैर ज़िम्मेदारी से येह काम हुवा था, ह़ज़रत उस जल्से में तशरीफ़ नहीं लाए। इस्माईलपुर के लोग दो रोज़ ह़ज़रत का इन्तिज़ार कर के जब वापस हुए तो आते वक़्त उन लोगों ने अपनी अपनी मुख़्तलिफ़ ह़ाजतों के बारे में एक एक पर्ची लिख कर एक साह़िब को दे रखी थी, जब येह लोग वापस आए और ह़ज़रत की ज़ियारत से मह़रूम थे। और झुन्झलाए हुए थे। तो जिन साह़िब के पास वोह पर्चे थे, उन्हों ने कहा कि भई पर्चे ले लो और बरेली शरीफ़ भेज देना ! एक आदमी बिगड़ कर बोला : अमां ! पर्चा फेंको, बड़ा नाम सुना था और हम गए तो आए भी नहीं। बिला वजह इतनी तक्लीफ़ उठाई, अगर बुज़ुर्ग होते तो हम सब का काम ज़रूर हो जाता। जिन साह़िब के पास येह पर्चे थे, उन्हों ने जब अपनी जेब से पर्चा निकाला तो देखा जितने पर्चे थे सब की पुश्त पर ह़ज़रत (मुफ़्तिये आज़मे हिन्द رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه) ही के क़लम से और ह़ज़रत ही की तह़रीर में हर सुवाल का जवाब मौजूद था। यहां तक कि तावीज़ अलग लिखे थे। एक पर्चे में मस्अला पूछा था, उस का जवाब भी मौजूद था, और ह़ज़रत के

दस्तख़त मौजूद थे। लोग हैरान रह गए। डॉक्टर हाफ़िज़ शेर ज़मां ख़ां साहिब जो इस्माईलपुर के मश्हूर आदमी हैं और वोह हज़रत के मुरीद भी हैं। उन के पास हज़रत के कई ख़त रखे थे। उस ख़त से उन पर्चों की तहरीर मिलाई गई तो बिल्कुल वोही तेहरीर थी किसी क़िस्म का फ़र्क़ नहीं। लोगों ने उस पर्चे को ले कर अपने पास हमेशा के लिए महफ़ूज़ कर लिया एक साहिब ने तो कहा : अगर कोई हमें दस हज़ार रुपिया भी दे तो हम इस पर्चे को न देंगे।

(मुफ़्तिये आज़मे हिन्द की करामात, स. 61)

अल्लाह पाक मुफ़्तिये आज़मे हिन्द رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के फ़ैज़ान से हम सब को भी मालामाल फ़रमाए। اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صلَّى الله عليه واله وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّى اللهُ على محمَّد

تُوبُوا اِلَى الله ! اَسْتَغْفِرُ الله

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّى اللهُ على محمَّد

वफ़ाते पुर मलाल

मुफ़्तिये आज़मे हिन्द رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने निहायत मुक़द्दस पाकीज़ा ज़िन्दगी मुबारक गुज़ार कर 14 मुहर्रमुल हराम 1403 हिजरी ब मुताबिक़ 12 नवम्बर 1981, दाइये अजल को लब्बैक कहा। आप की नमाज़े जनाज़ा इस्लामिया इन्टर कॉलेज बरेली शरीफ़ में हुई, जिस में लाखों मुसलमानों ने शिर्कत की। आप का मज़ारे पुर अन्वार ख़ानक़ाहे रज़विय्या महल्ला सौदागरान बरेली शरीफ़ में अपने वालिदे माजिद इमामे अहले सुन्नत आला हज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के बाएं पहलू में ज़ियारत गाहे ख़ासो आम है।

अमीरे अहले सुन्नत हज़रते अल्लामा मौलाना मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه लिखते हैं।

मुफ़्तिये आज़म से हम को प्यार है اِنْ شَآءَاللّٰه *अपना बेड़ा पार है*

(बित्तसर्रुफ़, मल्फ़ूज़ाते आला ह़ज़रत, स. 38)

मुफ़्तिये आज़म से हम को प्यार है

अमीरे अहले सुन्नत बानिये दावते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं : आ़रिफ़ बिल्लाह, मर्दे ह़क़ आगाह किश्वरे इ़ल्मो इ़रफ़ान के शहन्शाह महबूबे ह़बीबुल्लाह शह़ज़ादए इमाम अह़मद रज़ा, ताजदारे अहले सुन्नत हुज़ूर मुफ़्तिये आज़म ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن से मुझे प्यार है, और वोह भी आज से नहीं, इस पर एक ज़माना गुज़र गया। हुज़ूर मुफ़्तिये आज़म عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن की तारीफ़ व तौसीफ़ के कलिमात सुनते सुनते जेह़न आप की शाने विलायत निशान का मोतरिफ़ हो गया। (तुम अल्लाह पाक के गवाह हो लोगों पर) के मिस्दाक़ किसी शख़्स की अच्छाई के लिए इतना भी काफ़ी है कि लोग उस को अच्छा कहें और फिर बहुत सारे अच्छे लोग जिस का ज़िक्र अच्छाई के साथ करें, उस की अच्छाई का तो पूछना ही क्या।

मुफ़्तिये आज़म से हम को प्यार है

اِنْ شَآءَاللّٰه *अपना बेड़ा पार है*

(जहाने मुफ़्तिये आज़म, स. 255)

मन्क़बते मुफ़्तिये आज़म

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने मुफ़्तिये आज़मे हिन्द رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه से अपनी अ़क़ीदतो महब्बत का इज़्हार अपने नातिया दीवान "वसाइले बख़्शिश" में एक मन्क़बत की सूरत में पेश किया है, मन्क़बत के चन्द अश्आ़र मुलाह़ज़ा फ़रमाएं !

जबकि अदना सा गदा अ़त्तार है
मुफ़्तिये आज़म बड़ी सरकार है
اِنْ شَآءَاللّٰہ अपना बेड़ा पार है
मुफ़्तिये आज़म से हम को प्यार है
और मुहि़ब्बे सय्यिदे अबरार है
मुफ़्तिये आज़म रज़ा का लाडला
ख़ूब ख़ुश अख़्लाक़ो बा किरदार है
आ़लिम व मुफ़्ती फ़क़ीहे बे बदल
बन्दए दर बे कसो नाचार है
ताजदारे अहले सुन्नत अल मदद
इस्तिक़ामत की दुआ़ दरकार है
आला ह़ज़रत का रहूं मैं बा वफ़ा
तेरा मंगता त़ालिबे दीदार है
सय्यिदी अह़मद रज़ा का वसित़ा
साइलो उन का सख़ी दरबार है
हाथ फैला कर मुरादें मांग लो
येह तमन्नाए दिले अ़त्तार है
काश नूरी के सगों में हो शुमार

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صلَّی اللہُ علٰی محمَّد

ماخذ و مراجع

نام کتاب	مصنف / مؤلف	مطبوعہ
قرآن پاک	کلام باری تعالیٰ	مکتبۃ المدینہ
مسند ابی یعلیٰ	الإمام الحافظ أحمد بن علي بن المثنى التميمي (۲۱۰-۳۰۷ھ)	دار الحدیث القاہرۃ
جہان مفتی اعظم		رضا اکیڈمی
مفتی اعظم اور ان کے خلفا	مولانا شہاب الدین بہرائچی	رضا اکیڈمی ممبئی
حافظ کیسے مضبوط ہو	المدینۃ العلمیۃ	مکتبۃ المدینہ
مفتی اعظم کی استقامت و کرامت	مفتی عابد حسین مصباحی	المجمع القادری

تذکرہ علمائے اہلسنت	مولانا محمود قادری	سنی دار الاشاعت علویہ رضویہ
فتاوی مفتی اعظم ہند	مفتی اعظم ہند مصطفیٰ رضا خاں	امام احمد رضا اکیڈمی بریلی شریف
صراط الجنان	مفتی قاسم قادری عطاری	مکتبۃ المدینہ
وسائل بخشش	امیر اہلسنت حضرت علامہ مولانا ابو بلال محمد الیاس عطار قادری	مکتبۃ المدینہ
صحیح بخاری	امام محمد ابن اسماعیل بخاری	دار ابن کثیر
شرح النووی	امام یحی بن شرف نووی	دار إحیاء التراث العربي- بیروت
جامع العلوم والحکم	امام ابن رجب حنبلی	دار ابن کثیر، دمشق بیروت
مقالات مصباحی	مرتب مولانا توفیق احسن مصباحی	المجمع الاسلامی
مرآۃ المناجیح	مفتی احمد یار خان نعیمی	
مفتی اعظم ہند کی کرامات	راز الہ آبادی	مکتبہ اشرفیہ
ملفوظات اعلی حضرت	مرتب: مفتی اعظم ہند مصطفیٰ رضا خاں	مکتبۃ المدینہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमेरात बाद नमाज़े मग़रिब आप के यहां होने वाले दावते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतेमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिए अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइए ۞ सुन्नतों की तरबियत के लिए मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ۞ रोज़ाना जाइज़ा लेते हुवे नेक आमाल का रिसाला पुर कर के हर महीने की पेहली तारीख़ को अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मामूल बना लीजिए।

मेरा मदनी मक़्सद : "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।" اِنْ شَآءَاللّٰه عزوجل अपनी इस्लाह़ के लिए "नेक आमाल" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिए "मदनी क़ाफ़िलों" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَاللّٰه عزوجل

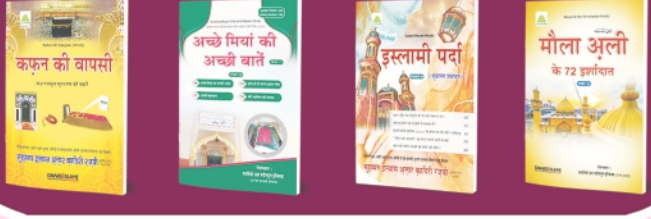

NET MRP ₹ 10/-

DAWATE ISLAMI INDIA

FGN Channel Dekhte Rahiye

MAKTABA TUL MADINA INDIA

Delhi : 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110006 +91-8178862570

Mumbai : 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi Post Office, Mumbai-400003 +91-9320558372

Ahmedabad : Faizane Madina, Tinkonia Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad-380001 +91-9327168200

Nagpur : Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar Road, Mominpura, Nagpur-440018 +91-9326310099

www.maktabatulmadina.in feedbackmmhind@gmail.com

For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply) +91-9978626025